भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड –XXV अंक–11 15 जून, 2020

यस्य सर्वे समारम्भाः कामस संकल्पवर्जिताः ज्ञानाग्निदग्धकर्माणां तमाहुः तण्डितं बुधाः।।

जिसके सम्पूर्ण शास्त्र सम्मत कर्म बिना कामना और संकल्प के होते हैं तथा जिसके समस्त कर्म ज्ञानरूप अग्नि के द्वारा भस्म हो गए हैं, उस महापुरुष को ज्ञानीजन भी पण्डित कहते हैं। **श्रीमद्भगवद्गीता 4/19**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/IESI/U-3/2020/236744 दिनांक 3.6.2020 के अनुसार **प्रो. अशोक कुमार भतेजा** ने 13.5.2020 से संस्थान के अमर नाथ एवं शशि खोसला सूचना प्रौद्योगिकी स्कूल में अतिथि प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/IESI/U1/237564 दिनांक 8.6.2020 के अनुसार **प्रो. पृथ्वीराज मुखोपाध्याय** ने 20.5.2020 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग– I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U-3/2020/238063 दिनांक 10.6.2020 के अनुसार **प्रो. कीर्ति ध्वज** ने 22.5.2020 से संस्थान के अनुप्रयुक्त इलैक्ट्रिकल अनुसंधान केन्द्र (CARE) में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. कीर्ति ध्वज को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक जो भी पहले हो के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U-3/2020/238023 जून, 2020 के अनुसार **प्रो. विपिन कुमार** ने दिनांक 18.5.2020 से संस्थान के ऊर्जा अध्ययन केन्द्र में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U-3/2020/238070 दिनांक 10.6.2020 के अनुसार **प्रो. अखिल गर्ग** ने 26.5.2020 से संस्थान के ऑटोमोटिव रिसर्च और ट्राइबोलॉजी केन्द्र (CART) में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. अखिल गर्ग को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक जो भी पहले हो के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/ IESI/U-3/2020/238591 दिनांक 15.6.2020 के अनुसार **प्रो. तपज्योती दास गुप्ता** ने 13.5.2020 से संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. तपज्योति को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक जो भी पहले हो के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/237253 दिनांक 5.6.2020 के अनुसार **श्रीमती अल्पना भसीन** ने 5.6.2020 को संस्थान के हिन्दी कक्ष में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–6 में कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/237917 दिनांक 10.6.2020 के अनुसार **श्री शाहनवाज आलम** ने 19.5.2020 को संस्थान के ऊर्जा अध्ययन केन्द्र में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–5 में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-1I/2020/236776 दिनांक 3.6.2020 के अनुसार **श्री सूर्य प्रकाश त्रिपाठी** ने 13.3.2020 को संस्थान के सुरक्षा एकक में अनुबन्ध आधार पर 3 वर्ष की अवधि के लिए सातवें वेतन आयोग के लेवल–3 में कनिष्ठ सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

राजभाषा नियम 1976 नियम 5

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आवश्यक रूप से हिंदी में दिए जाएं (अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों की पावती हिंदी में

भेजे)। अतः सभी विभाग/केन्द्र/अनुभाग/प्रकोष्ठ/एकक आदि को सूचित किया जाता है कि वे हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर केवल हिंदी में दें और उनका रिकॉर्ड रखें। इसका उल्लंघन होने पर संबंधित अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

आज के डिजिटल युग में पुस्तक का अस्तित्व

भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में समस्त बुद्धिजीवी वर्ग पुस्तक के भविष्य को लेकर चिंतित है। आये दिन सेमिनार और गोष्ठियों में यह चर्चा जोर पकड़ रही है की इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव के कारण पुस्तक हाशिए पर चली गई है। पर सवाल ये उठता है कि क्या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम पुस्तक की जगह लेंगे या इलेक्ट्रॉनिक के इस युग में भी पुस्तक जिंदा रहेगी? किताबों के महत्व पर चर्चा करते वक्त किताबों के अस्तित्व पर उठाए गए सवाल पर बीसवीं सदी के महान लेखक बौर्खेज का जवाब खास मायने रखता है कि "पुस्तकों का अस्तित्व कभी नहीं मिटेगा! मनुष्य के ढेर सारे आविष्कारों में किताबें सर्वाधिक विस्मयकारी आविष्कार है। दूसरी तमाम चीजें हमारे शरीर का विस्तार होती हैं, जैसे टेलीविजन हमारी आवाज का, टेलिस्कोप, माइक्रोस्कोप हमारी दृष्टि का विस्तार है, सिर्फ किताबें ही है जो हमारी कल्पनाओं एवं स्मृतियों को विस्तार देतीं हैं।"

मानव इतिहास में भाषा, अक्षर तथा मुद्रण तीन ऐसे क्रांतिकारी आविष्कार हैं जिन्होंने मानव के विकास को नई दिशा दी है। भाषा के जन्म ने आपसी संवाद को, अक्षर ने स्मृति के संग्रह को संभव बनाया है, परंतु मुद्रण ने ज्ञान के एकाधिकार को समाप्त कर उसका जनतांत्रिकरण कर दिया है। जहां एक ओर मुद्रण के आविष्कार ने किताब को एक विशिष्ट वर्ग के संकीर्ण दायरे से निकालकर सर्वसुलभ कर दिया है। वहीं बीसवीं सदी में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के जरिए बढ़ते बाजारवाद में किताबों के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। कंप्यूटर और इंटरनेट के घर–घर में पहुंचने से न केवल युवा पीढ़ी बल्कि बच्चों एवं वृद्धों को भी ये माध्यम आकर्षित करने लगते हैं।

आज लगभग सभी वर्ग के घरों से पुस्तकें लगभग लुप्त होती जा रही हैं। अधिकतर वक्त इंटरनेट या संचार माध्यमों में गुजरने लगा है। किसी भी शुभ अवसर पर उपहार स्वरूप ज्ञानवर्धक पुस्तकें पाकर बच्चे इतने खुश नहीं होते जितने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट पाकर खुश होते हैं। आधुनिकता की प्रतीक समझी जाने वाली यह उपभोक्ता वस्तुऐं पुस्तकों के मुकाबले लोगों को ज्यादा पसंद आने लगी है। इसमें कोई शक नहीं कि कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उच्च एवं मध्यम वर्ग के लोगों के जीवन में तेजी से घर करते जा रहे हैं। पर आज भी हमारे देश का बहुत बड़ा वर्ग निरक्षर है। प्रश्न यह है कि इस वर्ग के लोग किस तरह सामाजिक एवं बौद्धिक गतिविधियों में शामिल हो सकेंगे। उपभोग के साधनों में टेलीविजन, मोबाइल, कंप्यूटर और तमाम अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट है, पर पुस्तक नहीं है। इंटरनेट पर ज्ञान एवं सूचना की सारी चीजें आसानी से और तेजी से हासिल की जा सकती हैं। ऐसे में पुस्तकें खरीदने रखने और पढ़ने की तकलीफ क्यों की जाए? प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक सभी तरह के प्रचार माध्यमों पर इसी तरह के बाजारवाद ने कब्जा कर लिया है। उनकी प्राथमिकता में पुस्तक की कोई जगह नहीं रहने दी जा रही है। आज इंटरनेट के जरिए घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने से जुड़ी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। दरअसल, इसमें किताबों को दुकानों तक सीमित न रखकर घर–घर पहुंचा दिया है। बड़े–बड़े विश्वकोष रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ सीडी व डीवीडी में संग्रहित कर दिये गए हैं। इस दृष्टि से तो यही लगता है कि यह प्रौद्योगिकी पुस्तकों की शत्रु नहीं बल्कि सहयोगी है। डिजिटल क्रांति के चलते पुस्तक का भविष्य अधिक उत्तेजित एवं संभावना पूर्ण होने की पूरी उम्मीद व्यक्त की जा सकती है। इसके पक्ष में बोलने वालों की यह भी धारणा है कि सूचना क्रांति से होने वाले परिवर्तनों को एक औषधि के रूप में लिया जाना चाहिए।

बेशक! इलेक्ट्रॉनिक या सूचना क्रांति के फायदे अपनी जगह है उससे इनकार नहीं किया जा सकता पर पुस्तकों के उत्पादन की जो मानवीय जरूरत है उसे यांत्रिक उपकरणों से पूरा नहीं किया जा सकता। आज भी मुद्रित शब्दों को अधिक प्रमाणिक और गंभीरता से लिया जाता है क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक कवरेज का असर तत्काल और सनसनीखेज तो अवश्य रहता है, पर यह अल्पमत तक ही रहता है। जबकि मुद्रित शब्दों का देर तक और दूरगामी असर होता है। पुस्तकें हमारी चिंतनशीलता को बरकरार रख कर हमें उदार बनाती हैं। शायद, यही वजह है कि विदेशों में कई वर्षों से कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट फोन, टैबलेट आदि घर–घर पहुंचने के बावजूद किताबों के छपने और खपने की प्रक्रिया कभी बंद नहीं हुई। फ्रांस, रूस, ब्रिटेन, यूरोप के कई शहरों में आज भी किताबों को खरीदने के लिए लंबी कतारें देखी जा सकती हैं। विदेशों में भी पुस्तकों की संख्या उतनी ही है जितनी दुकानों की, जहां बड़ी संख्या में पाठक पूरा–पूरा दिन घर में गुजारते हैं।



पुस्तक हाथ में लेते ही विचारों एवं भावनाओं का एक जीवंत संसार खुल जाता है, जिसे ई–बुक से महसूस नहीं किया जा सकता है। पुस्तक सीधे मस्तिस्क को प्रभावित करती हैं इसलिए मनुष्य जीवन पर उसके तत्काल प्रभाव को आना संभव नहीं है। हां, यह जरूर है

कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने ज्ञान एवं सूचना के तमाम विकल्प उपलब्ध कराए हैं उससे किताबों के प्रति लोगों का रुझान घटा है। किताब के विकास के बाद से ही अभिव्यक्ति के कई दूसरे माध्यम निरंतर आते रहे हैं। मुद्रण कला के विकास के साथ किताब फिर फोटोग्राफी, रेडियो चलचित्र, ऑडियो–वीडियो आये। इन सभी के जरिए ज्ञान व सूचना के नए मार्ग खुले। पुस्तक बनाम ई–पुस्तक पर चर्चा कोई नई बात नहीं है। आए दिन तरह–तरह के अनुमान लगाए जाते हैं। इनमें ई–बुक्स के बढ़ते–घटते विक्रय और प्रकाशन संसार में इससे हो रही उथल–पुथल के बारे में बहस होती है। आंकड़े जो भी कहें, मुद्रित पुस्तकों का अस्तित्व और आकर्षण बढ़ा है और आने वाले दिनों में बना ही रहेगा। पुस्तकों का अपना एक अलग महत्व होता है। चाहे इंटरनेट की कितनी भी बात कर ली जाए, पुस्तकों का महत्व कम नहीं होगा। आज चूंकि मीडिया से जुड़े तमाम रूप एक साथ उभर रहे हैं, इसलिए किताबों के अस्तित्व को लेकर कई आशंकाएं जोर पकड़ने लगी हैं। पर उन तमाम आविष्कारों के किसी भी काल या देश में किताब का महत्व न कभी कम हुआ है, और ना होगा। कोई भी तकनीक ज्ञान या विकास का अंतिम जरिया नहीं होती। हर नए विकास के साथ नए विकल्प उभरते हैं और कुछ पुराने पड़ जाते हैं। बदलते दौर में यह जरूरी है कि किताब एवं किताब के रचनाकार नए रूपों एवं विकल्पों में खुद को ढालें एवं अपनी सार्थकता को बनाए रखने के लिए इस चुनौती को स्वीकारें।

–डॉ. नीरज चौरसिया
केन्द्रीय पुस्तकालय

ekr`Hkk"kk dh egÙkk

(समाज व संस्कृति के विकास में मातृभाषा के महत्व को रेखांकित कर रहे हैं–हृदयनारायण दीक्षित)

मैक्समूलर ने लिखा है कि भारत के मानवीय–मस्तिष्क ने कुछ सर्वोत्तम गुणों का पूर्ण विकास किया है। जीवन की बड़ी से बड़ी समस्याओं पर भारत द्वारा प्राप्त हल प्लेटो और कांट के दर्शन का अध्ययन किए हुए लोगों के लिए भी विचार करने योग्य है। यूनानी, रोमन और सेमेटिक जाति यहूदी के विचारों मात्र पर पालित पोषित यूरोप के हम लोग जीवन को अधिक परिपक्व, अधिक व्यापक, अधिक सार्वलौकिक दरअसल अधिक सच्चे मानवीय बनाने के लिए भारत की ओर ही देखते हैं। लेकिन भाषा के प्रश्न पर महात्मा गांधी ने लिखा है, ''पृथ्वी पर हिंदुस्तान ही एक ऐसा देश है जहां मां बाप अपने बच्चों को अपनी मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी पढ़ाना लिखाना पसंद करेंगे।'' देश की मातृभाषा, राजभाषा हिंदी है, लेकिन अंग्रेजी के सामने कमतर है।

अंग्रेजी को विश्व भाषा बताया जाता है, लेकिन जापान, रूस और चीन आदि अनेक देशों में अंग्रेजी की कोई हैसियत नहीं है। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा बनाया, 15 वर्ष तक अंग्रेजी में राजकाज चलाने का परंतुक जोड़ा। अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद ने समापन भाषण में कहा ''हमने संविधान में एक भाषा रखी है। अंग्रेजी के स्थान पर एक भारतीय भाषा हिंदी को अपनाया है। हमारी परंपराएं एक हैं, संस्कृति एक है।'' इसके एक दिन पूर्व नेहरू ने कहा, हमने अंग्रेजी इस कारण स्वीकार की क्योंकि यह विजेता की भाषा थी, ''अंग्रेजी कितनी ही अच्छी हो किंतु इसे हम सहन नहीं कर सकते।'' इसके भी एक दिन पूर्व एनजी आयंगर ने सभा में हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव रखते हुए 15 बरस तक अंग्रेजी को जारी रखने का कारण बताया, हम अंग्रेजी को एकदम नहीं छोड़ सकते। यद्यपि सरकारी प्रयोजनों के लिए हमने हिंदी को अभिज्ञात किया फिर भी हमें यह मानना चाहिए कि आज यह सम्मुनत भाषा नहीं है।'' पं. नेहरू अंग्रेजी सहन करने को तैयार नहीं थे, राजभाषा अनुच्छेद के प्रस्तावक हिंदी को कमतर बता रहे थे। संविधान सभा में तीन दिन तक बहस हुई। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में हिंदी राजभाषा बनी, किंतु अनुच्छेद 343 (2) में अग्रेंजी जारी रखने का प्रावधान हुआ। हिंदी के लिए आयोग, समिति बनाने की व्यवस्था हुई। हिंदी के विकास की जिम्मेदारी अनुच्छेद 351 के तहत केंद्र पर डाली गई, लेकिन स्थितियां जस की तस हैं। बेशक अंग्रेजी विजेता की भाषा थी, लेकिन 1947 के बाद हिंदी भी विजेता की भाषा थी। अंग्रेज जीते, अंग्रेजी लाए, भारतवासी स्वाधीनता संग्राम जीते, हिंदी क्यों नहीं लाए ? स्वाधीनता संग्राम की भाषा हिंदी थी, लेकिन कांग्रेस अपने जन्मकाल से ही अंग्रेजी को वरीयता देती रही।

गांधी जी ने कहा, अंग्रेजी ने हिंदुस्तानी राजनीतिज्ञों के मन में घर कर लिया है। मैं इसे अपने देश और मनुष्यत्व के प्रति अपराध मानता हूँ। भारतीय संस्कृति, सृजन और संवाद की भाषा हिंदी है। बावजूद इसके 57 बरस के दीर्घकाल में अंग्रेजी का मोह बढ़ा, अंग्रेजी स्कूल बढ़े, अंग्रेजी प्रभुवर्ग की भाषा बनी। भूमंडलीकरण ने नवधनाढ्य समाज बनाया। जो अंग्रेजी महज ज्ञापन की भाषा थी वहीं विज्ञापन की भाषा में घुसी। हिंदी का अंग्रेजीकरण हुआ टी.वी. एवं सिनेमा ने नई संकर भाषा को गले लगाया। हिंदी ऐद्रिक कामुकता को भी सौंदर्य एवं कला में व्यक्त करने का माध्यम थी और है। अंग्रेजीकृत हिंदी इंग्लिश मिश्रित बोली ने उदात भारतीय सौंदर्य बोध को भी सेक्सी बनाया। अंग्रेजी मिश्रित हिंदी शैम्पू बेचने का माध्यम हो सकती है, लेकिन सृजन और संवाद की भाषा नहीं हो सकती। बाजार नई भाषा गढ़ रहा है। सरकार वोट भाषा गढ़ रही है। मातृभाषा संकट में है। स्वभाषा के बिना संस्कृति निष्प्राण होती है, स्वसंस्कृति के अभाव में राष्ट्र अपना अंतस, प्राण, चेतन और तेज खो देते हैं। अंग्रेजी को अंतरराष्ट्रीय भाषा बताने वाले भारतीय दरअसल आत्महीन ग्रन्थि के रोगी हैं। अमेरिकी भाषा विज्ञानी ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी की बाबत (लैंग्वेज पृष्ठ 52) लिखा '' यार्कशायर (इंग्लैड) के व्यक्ति की अंग्रेजी को अमेरिकी नहीं समझ पाते। दूसरे भाषाविद डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा अंग्रेजी के भारतीय प्रोफेसरों को हॉलीवुड की फिल्म दिखाइए, पूछिए वे कितना समझे। अंग्रेजी बोलने के भिन्न–भिन्न ढंग हैं। इसके विपरीत हिंदी की सुबोधता को हर

किसी ने माना है। हिंदी अपनी बोलियों के क्षेत्र में तो समझी ही जाती है, गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में भी इसे समझने वाले करोड़ो हैं। जर्मनी और आस्ट्रेलिया की भाषा जर्मन है। स्विट्जरलैंड के 70 फीसदी लोगों की मातृभाषा भी जर्मन है।

चेक, स्लोवाकिया, हंगरी, युगोस्लाविया और पौलैंड के लोग जर्मन समझते हैं। अंग्रेजी के जानकार कम हैं तो भी वह विश्व भाषा है। हिंदी वाले ज्यादा हैं बावजूद इसके वह राष्ट्रभाषा भी नहीं है। भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां पूंजी के साथ भाषा लाती है। भाषा के साथ संस्कृति आती है। संवाद की शैली बदलती है। जन संपर्क उद्योग बनता है। गुजरे वर्ष भाषा विज्ञानी नोम चोम्सकी ने कहा कि करोड़ो डॉलर से चलने वाले जनसंपर्क उद्योग के जरिए बताया जाता है कि दरअसल जिन चीजों की जरूरत उन्हें नहीं है वे विश्वास करें कि उनकी जरूरत उन्हें ही है। भाषा के विकास की प्रक्रिया में संस्कृति और आर्थिक उत्पादन के कारक प्रभाव डालते हैं। अमेरिकी समाज का विकास गरीबों के शोषण, लूट–खसोट, अंग्रेजी और पूंजीवाद से हुआ। अमेरिकी नई पीढ़ी अपना मूल स्रोत नहीं जानती। भारत की भी नई पीढ़ी अपने मूल स्रोत–भाषा, संस्कृति और दर्शन से कटी हुई है। नोम चोम्सकी ने अमेरिकी समाज को हिंसक और तनावग्रस्त बताया। हिंदी के पास प्राचीन संस्कृति और परंपरा का सुदीर्घ इतिहास है। यहां अनेक भाषाएं, बोलियां उगी। भाषा के विकास के साथ वस्तुओं के रूप को नाम देने की परंपरा चली। रूप और नाम मिलकर ही परिचय बनते हैं। तुलसीदास ने यही बात हिंदी में गाई 'रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना'। हिंदी के पास संस्कृत और संस्कृति की अकूत विरासत है। ऋग्वेद ने भाषा के न्यूनतम घटक को अक्षर बताया। अक्षर नष्ट नहीं होता। वाणी में सात सुर हैं, लेकिन अक्षर मूल है।

हिंदी ने संस्कृत सहित सभी भारतीय भाषाओं एवं बोलियों से शब्द लिए, सबको अर्थ दिए। संविधान निर्माण के बाद 1951 में नियुक्त आफीसियल लैग्वेज कमीशन ने अंग्रेजी के जानकारों की संख्या लगभग 0.25 प्रतिशत बताई। एक प्रतिशत से भी कम अंग्रेजी लोग देश के नीति–नियंता बने, सरकारें अंग्रेजी में सोचती है, देश हिंदी में रोता है। हिंदी फिल्मों में संवाद–गीत हिंदी में होते हैं, लेकिन नाम, परिचय अंग्रेजी में। निर्माता, निर्देशक, नायक, नायिकाएं अपने साक्षात्कार अंग्रेजी में देते हैं। इनसे प्रभावित युवा पीढ़ी 'हाय गाइज रियली स्पीकिंग' बोल रही है। राष्ट्र अपनी भाषा में ही अभिव्यक्त होते हैं। मातृभाषा में ही प्रीति, प्यार, राग, द्वेष, काव्य सर्जन चरम पाते हैं। कल हिंदी दिवस आया, उत्सव हुए। फर्जी बाते हुई। राष्ट्र राज्य बाजार के हवाले हैं, सो हिंदी भी बाजार की कृपा अनुकंपा पर है। बाजार और सरकार से अपेक्षाएं छोड़कर संपूर्ण राष्ट्र मातृभाषा में बोले, लिखे और उसे समृद्ध करे। भारत का भविष्य हिंदी है। हिंदी हमारी अभिव्यक्ति है, हमारे आनदं का चरम संगीत और काव्य भी।

साभार – दैनिक जागरण
दिनांकः 15 सितम्बर 2019

कविता

कोरोना वायरस

कोरोना ने सब को डराया है, लोगों को बहुत रुलाया है ,
पहले लोगों के मिलने पर उनसे हाथ मिलाते थे।
अब तो हम सबसे, हाथ जोड़कर मिलते हैं।
कोरोना ने सब को डराया है, लोगों को बहुत रुलाया है।

त्राहि त्राहि चहुँ ओर मची है, ऑफिस दुकान सब बंद हुई हैं ,
घर पर बैठ के मौज करो, कहीं आना जाना बंद करो।
कोरोना ने सब को डराया है, लोगों को बहुत रुलाया है।।

हाथ मिलाओगे तो सब डर जायेंगे, गले लगाओगे तो मर जायेंगे,
कोरोना ने सब को डराया है, लोगों को बहुत रुलाया है।
ऐसे डरे हुए हैं लोग, सैनीटाइजर का करो प्रयोग,
इसको समझने में, सब की भलाई है,
पूरी दुनिया में कोरोना से लड़ाई है।
कोरोना ने सब को डराया है, लोगों को बहुत रुलाया है।

बाहर से तुम कहीं से आओ, सबसे पहले सैनीटाइजर लगाओ,
लोगों को दिल से प्यार करो, लेकिन दूर से ही इजहार करो,
कोरोना ने सब को डराया है ,लोगों को बहुत रुलाया है।

जान है तो जहान है ऐसा मैंने माना है,
कहते गोविन्द सबकी जागरूकता को जगाना है,
सैनीटाइजर और मास्क लगाओ, और कोरोना को दूर भगाओ,
कोरोना ने सब को डराया है, लोगों को बहुत रुलाया है।

–गोविन्द प्रसाद
नैनोस्केल रिसर्च फैसिलिटी (N.R.F)

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com